दूधनाथ सिंह के कथा–साहित्य का शिल्प विधान पर अध्ययन

Pinki*

Assistant Professor
Sanatan Dharam Mahila Mahavidyalaya, Hansi, Haryana, India

***Email ID**: vikas.bhambu@gmail.com*

Accepted: 08.10.2022 **Published**: 01.11.2022

मुख्य शब्दः कथा–साहित्य, आधुनिक युग।

शोध आलेख सार

दूधनाथ सिंह एक जाने–माने कथाकार थे जिनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, दार्शनिकता और मानवता के विभिन्न पहलुओं का खूबसूरत संगम दिखता है। उनके द्वारा लिखित कहानियाँ विविध विषयों पर आधारित होती हैं, जैसे राजनीति, समाज, परिवार, महिलाओं के अधिकार, धर्म, आदि।

दूधनाथ सिंह का कथा–साहित्य बहुत ही सुखद और सरल होता है। उनके कथाओं में दिखाई देने वाले चरित्र बहुत ही स्पष्ट होते हैं, जिससे पाठक उनसे आसानी से संबंधित कर सकते हैं। दूधनाथ सिंह के कथा–साहित्य में रस और भाव बहुत ही शानदार ढंग से प्रदर्शित होते हैं। उनकी कहानियों में रंग–बिरंगे चरित्र, जबरदस्त डायलॉग और समस्याओं के सुलझाव का शानदार समाधान दिखता है।

दूधनाथ सिंह अपनी कहानियों में व्यंग्य, सत्यापित तथ्य, ज्ञान, तर्क, नैतिकता और जीवन के दर्शन का प्रभाव देते हैं।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

© IJRTS Takshila Foundation, Pinki, All Rights Reserved.

भूमिका

कथेतर साहित्य के अंतर्गत वे साहित्यिक विधाएँ आती हैं, जिनमें कथा का विशेष महत्व नहीं होता । गद्य की इन स्वतंत्र विधाओं का विकास आधुनिक युग में हुआ । इनके विकास में पत्र– पत्रिकाओं की विशेष

भूमिका रही हिंदी में सामान्यतः गद्य साहित्य के अंतर्गत उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, आलोचना आदि का महत्वपूर्ण स्थान रहा। नई विधाओं की तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया गया। साहित्य की इन्हीं नई विधाओं को कवेतर साहित्य कहा गया। कबेतर साहित्य वास्तविकता पर आधारित होता है । कथेतर से तात्पर्य साहित्य की उन विधाओं से हैं जो कहानी और उपन्यास से अलग होते हैं। 'कथेतर साहित्य' पर विचार करने से पूर्व 'साहित्य' शब्द को समझना आवश्यक है। 'साहित्य' शब्द का सामान्य अर्थ है 'समस्त मुद्रित वाड्.मय' अर्थात लिखे हुए अक्षरों का जितना विस्तार है, वही साहित्य है। साहित्य की दो शैलियों हैं पद्य साहित्य और गद्य साहित्य गद्य साहित्य के दो रूप हैं – कथात्मक गद्य और कथेतर गद्य । कथात्मक गद्य की पाँच विधाएँ है जो कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी और लघुकथा के नाम से जानी जाती हैं और कथेतर गद्य की दस प्रमुख विधाएं हैं जिनमें निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा–वृत्तांत, समालोचना, जीवनी, आत्मकथा, पत्र, साक्षात्कार, डायरी एवं समीक्षा आदि आते हैं। इनमें से कुछ एक का सामान्य परिचय यहाँ प्रस्तुत है–

यात्रा–वृत्तांत

एक जगह से दूसरी जगह जाना या घूमने की क्रिया 'यात्रा' कहलाती है। आधुनिक काल में यात्राओं के विवरण की साहित्यिक अभिव्यक्ति यात्रा–वृत्तांत कहलाती है। यात्रा वृत्तांत एक आधुनिक साहित्यिक विधा है, जिसमें जिस स्थान की यात्रा की जाती है उसका आत्मीयता, कल्पनाशीलता और रोचकता के साथ वर्णन किया जाता है। यात्रा–वृत्तांत में स्थान विशेष के रीति–रिवाज, रहन सहन, आचार–व्यवहार, मनोरंजन के साधन, प्राकृतिक सौंदर्य, जलवायु और उसके पूरे परिवेश को प्रस्तुत किया जाता है। ऐसी स्थिति में वह कथा साहित्य की शैली को अपनाकर सहज, सरल और रोचक ढंग से अपनी बात रखता है। यात्रा–वृत्तांत में बीते समय, दूर बसे स्थान को विषय बनाया जाता है। यात्रा वृत्तांत की ये विशेषता होती है कि इसमें मिथक, प्रतीक, अलंकार, मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों का सफल प्रयोग किया जाता है। यात्रा के समय लेखक जिन स्थानों को देखता है उन्हें वह भूगोल और इतिहास के संदर्भ में देखता है।

वैसे यात्रा–वृत्तांत तो भारतेंदुकालीन पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए लेकिन 1900 ई. के बाद निबंधों के रूप में यात्रा साहित्य अनेक पत्र–पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होते रहें। प्रमुख यात्रा– वृत्तांतों में महावीर प्रसाद द्विवेदी का 'व्योम विहरन', 'उत्तर ध्रुव की यात्रा', 'दक्षिणी की 'यात्रा', श्रीधर पाठक की 'देहरादून शिमला यात्रा', लक्ष्मीशंकर मिश्र की 'विलायतसमुद्र यात्रा', हरिस्वरूप शर्मा शास्त्री की 'कश्मीर समीर', ठाकुर गंगाधर सिंह की 'हमारी एडवर्ड तिलक विलायत यात्रा', पंडित रमाशंकर व्यास की 'पंजाब यात्रा', सत्यदेव परिव्राजक की 'अमरीका दिग्दर्शन' 'मेरी कैलाश यात्रा', 'मेरी जर्मन यात्रा', वेणी शुक्ल की 'लंदन पेरिस यात्रा', 1 कन्हैयालाल मिश्र की 'हमारी जापान यात्रा', 'मेरी अबीसीनिया यात्रा', 'इराक की यात्रा', कृष्ण सिंह बघेल को 'कश्मीर और सीमाप्रांत', 'तिब्बत में तेईस दिन', 'हिमालय के कुछ स्थान', राहुल सांकृत्यायन का 'तिब्बत में

सवा बरस', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'मेरी जीवन यात्रा' सेठ गोविंद दास को 'हमारा प्रधान उपनिवेश', 'सुदूर दक्षिण–पूर्व', 'पृथ्वी परिक्रमा', रामवृक्ष बेनीपुरी की 'पैरों में पंख बाँधकर', 'पेरिस नहीं भूलती', 'मेरे तीर्थ', रामधारी सिंह दिनकर की 'देश विदेश', डॉ. कुमुद का 'बदरी केदार के पथ पर, इंदु जैन का 'पत्तों की तरह चुप' आदि प्रमुख यात्रा–वृत्तांत हैं।[1]

संस्मरण

'संस्मरण' शब्द का अर्थ स्मृति से है। किसी स्मृति विशेष को साहित्यिक रूप में अभिव्यक्त करने की कला 'संस्मरण' कहलाती है। 'संस्मरण' में अतीत की घटनाओं का वर्णन होता है। एक संस्मरणकार अपने संपर्क में आए हुए व्यक्तियों, वस्तुओं और घटनाओं को संस्मरण में स्थान देता है। इसमें संपूर्ण जीवन का चित्रण न होकर कुछ घटनाओं का चित्रण होता है, जीवन के किसी एक हिस्से को प्रस्तुत किया जाता है।

संस्मरण साहित्य गद्य की स्वतंत्र विधा के रूप में बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में स्थापित होता है। हिंदी गद्य साहित्य में संस्मरण लेखन की परंपरा भारतेंदु युग से ही मानी जाती है। अंबिकादत्त व्यास का 'निज वृत्तांत', चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' का 'बाबू अयोध्या प्रसाद के संस्मरण, बाबू श्याम सुंदरदास का 'लाला भगवानदीन', विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कोशिक' का 'मेरा वह बाल्यकाल', पद्म सिंह शर्मा का 'पद्म पराग', श्रीराम शर्मा की 'बोलती प्रतिमा', 'सन बयालीस के संस्मरण', राधिकारमण प्रसाद सिंह का 'सावनी सम' टूटा तार', 'नारी क्या एक पहेली', 'वे और हम', महादेवी वर्मा का 'स्मृति की रेखाएँ', 'शृंखला की कड़ियाँ', 'पथ के साथी', शांतिप्रिय द्विवेदी का 'पथ चिह्न', बनारसीदास चतुर्वेदी का 'हमारे आराध्य', किशोरीदास वाजपेयी का 'आचार्य द्विवेदी और उनके संगी', उपेन्द्रनाथ अश्क का 'मंटो मेरा दुश्मन' शिवरानी देवी का 'प्रेमचंद : घर में', हजारीप्रसाद द्विवेदी का 'एक कुत्ता और एक मैना' रायकृष्ण दास की 'त्रिपथगा कृष्णा सोबती , का 'हम हशमत', अमृतलाल नागर का टुकड़े–टुकड़े वास्तान', 'जिनके साथ जिया, अमृता प्रीतम का 'लाल धागे का रिश्ता', आचार्य चतुरसेन शास्त्री का 'सुगंधित संस्मरण', विष्णु प्रभाकर का 'मेरे अग्रज, मेरे मीत' आदि उल्लेखनीय और प्रमुख संस्मरण हैं।[2]

रेखाचित्र

'रेखाचित्र' अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का हिंदी पर्याय है इसमें शब्दों के सहारे व्यक्ति का भावपूर्ण चित्र खींचा जाता है। रेखाचित्र में व्यक्ति की विशेषताएँ तीखेपन के साथ प्रस्तुत की जाती है। रेखाचित्र में वर्णनात्मकता मुख्य होती है। स्वतंत्र रूप से रेखाचित्र का विकास द्विवेदी युग से माना जाता है। बनारसी दास चतुर्वेदी, श्रीराम शर्मा, हरिशंकर शर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, महादेवी वर्मा, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, राधिका रमण प्रसाद सिंह, शिवपूजन सहाय, बाबू गुलाब राय, जैनेन्द्र, देवेन्द्र सत्यार्थी, उपेन्द्रनाथ अश्क, माखनलाल चतुर्वेदी,

[1] सिंह दूधनाथ, तुम्हारे लिए, पहला संस्करणः 2014, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 83
[2] सिंह दूधनाथ, 'कहा–सुनी', पहला संस्करण : 2005, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 29

आचार्य विनय मोहन शर्मा, विष्णु प्रभाकर, यशपाल, प्रभाकर माचवे, जगदीश चंद्र माथुर, रांगेय राघव, अमृत राय, पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, मदन वात्स्यायन, कृष्णा सोबती, हिमांशु जोशी, मन्मथनाथ गुप्त रघुवीर सहाय भगवती प्रसाद वाजपेयी, इलाचंद्र जोशी आदि ने इस विधा के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

साक्षात्कार

'साक्षात्कार' से तात्पर्य उस रचना से है जिसमें साक्षात्कार लेने वाला पत्राचार, भेंट अथवा दूरभाष द्वारा संपर्क स्थापित कर किसी विषय समस्या, परिस्थिति, स्थान अथवा व्यक्ति के संबंध में अपने पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों को किसी के विचारों से अवगत करवाता है। भारत को यह विधा पश्चिम की भेंट है। इसमें विषय का कोई बंधन नहीं होता है। हिंदी में अब इस विधा का तेजी से विकास हो रहा है। हिंदी में इस विधा के प्रवर्तन को लेकर मतभेद है। कुछ लोग इसके प्रवर्तन का श्रेय बनारसी दास चतुर्वेदी को देते हैं। इनके द्वारा लिए गए प्रथम साक्षात्कार का शीर्षक 'रत्नाकर जी से बातचीत है पंडित श्रीराम, प्रभाकर माचवे बेनीमाधव शर्मा, डॉ. सरनाम सिंह, डॉ. कमलेश, देवेंद्र सत्यार्थी, राजेन्द्र यादव, कैलाश कल्पित, सुरेश सिन्हा, बांके बिहारी सज्जन, अक्षय कुमार जैन, सुशीला अग्रवाल, कन्हैयालाल नंदन, डॉ. धर्मवीर भारती, शिवदान सिंह चौहान, श्रीकांत वर्मा, मनोहर श्याम जोशी, वीरेन्द्र सक्सेना, रवीन्द्र नागर, डॉ. माजदा असद, सावित्री परमार आदि ने साक्षात्कार विधा को पल्लवित और पुष्पित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

पत्र

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के पास जो व्यक्तिगत संदेश भेजता है, उसे पत्र कहते हैं। पत्र लेखन साहित्य की महत्वपूर्ण विधाओं में से एक है। पत्र संस्कृत भाषा का शब्द है। यह 'पत' धातु में 'ष्टर्न' प्रत्यय को जोड़ने से बना है। 'पत' धातु का शाब्दिक अर्थ है 'गिरना'। साहित्यिक दृष्टि से पत्रों का अपना विशिष्ट स्थान है। यह साहित्यकारों के व्यक्तित्व के पहचान की वास्तविक आधार शिला है। इसमें लेखक अपने हृदय की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है।

हिंदी में पत्र साहित्य की एक लंबी परम्परा रही है। इनमें बैजनाथ सिंह द्वारा संपादित 'द्विवेदी पत्रावली', पंडित किशोरीदास वाजपेयी द्वारा लिखित 'आचार्य द्विवेदी और उनके संगी–साथी', बनारसी दास चतुर्वेदी और हरिशंकर शर्मा द्वारा संपादित 'पद्मसिंह शर्मा के पत्र', धीरेन्द्र वर्मा और लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय द्वारा संपादित 'ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रारंभिक शासन संबंधी पत्र', वियोगी हरि द्वारा संपादित 'बड़ों के प्रेरणादायक पत्र', अमृत राय तथा मदन गोपाल द्वारा संपादित 'चिट्ठी–पत्री – भाग 1 और 2', काका कालेलकर द्वारा संपादित 'बापू के पत्र', पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' का 'फाइल और प्रोफाइल', जानकी बल्लभ

शास्त्री द्वारा संपादित 'निराला के पत्र वासुदेव शरण अग्रवाल द्वारा संपादित 'मैथिलीशरण गुप्त अभिनंदन ग्रंथ' आदि की गणना श्रेष्ठ पत्र साहित्य के अंतर्गत की जाती है।

उपरोक्त कथेतर विधाओं पर दृष्टिपात के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि साहित्य में इन विधाओं ने अपनी महत्वपूर्ण छाप छोड़ी है। इन सभी विधाओं का प्रसार आधुनिक काल में हुआ। इन विधाओं पर अपने समय का प्रभाव रहा। इसी प्रभाव को देखते हुए दूधनाथ सिंह, जिनकी गणना साठोत्तरी पीढ़ी के शीर्षस्थ साहित्यकारों में की जाती है, के कथेतर साहित्य पर विमर्श की माँग करता है।[3]

दूधनाथ सिंह के कथेतर साहित्य में मध्यवर्ग

साठोत्तरी पीढ़ी के रचनाकारों में दूधनाथ सिंह का नाम अग्रगण्य है इनकी पहचान मूलतः कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में है परंतु इनसे इतर भी इन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं में अपनी लेखनी चलायी। इनमें कविता, संस्मरण, आलोचना, साक्षात्कार आदि प्रमुख हैं। इन सभी विधाओं के गद्य में समानता नहीं होती। दूधनाथ सिंह की इन रचनाओं (कथेतर) में भारतीय समाज की बनावट को पहचाना जा सकता है। अपने लेखन कार्य के संबंध में वे कहते हैं–

"मैं जिन दिनों इलाहाबाद पढ़ने के लिए आया उन दिनों डॉ. धर्मवीर भारती और मुंशी लक्ष्मीकांत वर्मा 'निकष' पत्रिका निकाल रहे थे। पहले–पहल में नये साहित्य के सम्पर्क में उसी पत्रिका को पढ़कर आया। उसके पहले मैंने कुछ कविताएँ जरूर लिखी थीं। लेकिन मैं सन् 157 से लेकर 60' के आस–पास के समय को एक तरह का अभ्यास काल कहूँगा । उस समय मैं नहीं जानता था कि अंततः मैं लेखक बनना चाहता हूँ जैसे बहुत सारे लोग शुरू में लिखते हैं वैसे में भी घोड़ा बहुत लिखता था । ''''

दूधनाथ सिंह के इस कथन से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत कविता से को जो उनके लेखकीय चरित्र के बिल्कुल विपरीत था साथ ही दूधनाथ सिंह के लेखकीय चरित्र के निर्माण में सन 57 और 60 की परिस्थितियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह दौर एक ऐसा दौर था जिसमें लोगों का आजादी से मोहभंग हो चुका था, वैचारिक संघर्ष और बहसों का अभाव था । संयुक्त परिवार के टूटने, राजनीतिक दिशाहीनता की धीमी आहट, एकल परिवारों में दाम्पत्य जीवन में अंतर्विरोध उस दौर की वर्तमान परिस्थितियों को दर्शाते हैं, साथ ही मध्यवर्ग की मानसिक संरचना में आ रहे बदलावों को भी रेखांकित करते हैं। चूकि दूधनाथ सिंह का संबंध भी मध्यवर्ग से रहा है इसलिए इनकी अधिकांश रचनाओं में मध्यवर्गीय मानसिकता के इस उद्वेलन को देखा जा सकता है। इनके कथेतर साहित्य के अंतर्गत मध्यवर्ग की तलाश के दौरान कुछ एक कविताओं, पत्रों आदि में ही इस वर्ग की मानसिकता के दर्शन स्थान विशेष

[3] सिंह दूधनाथ, 'कहा–सुनी', पहला संस्करणः 2005, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–– 130

पर होते हैं अपने मानसिक और वैचारिक स्तर पर होने वाले परिवर्तन के संदर्भ में वे कहते हैं–''मैंने खोया कुछ भी नहीं और पाया बहुत कुछ।[4]

वैचारिक परिवर्तन से मैं व्यक्तिवादी पतनशीलता से बच गया। मैं मानता हूँ, अगर यह परिवर्तन न होता तो मेरे लिए लिखना असंभव होता, लेकिन मैंने अपनी रचनात्मकता के लिए ही इस वैचारिक विकल्प की खोज की। ''

यहाँ जिस व्यक्तिवादी पतनशीलता की ओर इशारा किया गया है दरअसल वह मध्यवर्गीय चरित्र की एक विशेषता है। चूंकि दूधनाथ सिंह का संबंध भी मध्यवर्ग से है इसलिए वे इस वर्ग के उन तमाम व्यक्ति केंद्रित पक्षों से खुद को मुक्त कर लेखन की ओर मुड़े अपने लेखक की निर्मित्ति के संदर्भ में दूधनाथ सिंह कहते हैं –

''पियरे लुई का 'अफ्रोदिती' जैसा उपन्यास और 'सांग्स आफ ब्लिटीज' जैसी गद्य कविता वाली किताबें रेणु ने ही अपने इलाहाबाद प्रवास के दौरान मुझे पढ़ने और रखने के लिए दी थीं। इस तरह एक संगठित और संश्लिष्ट अध्ययन ने एक लेखक के रूप में मेरा निर्माण किया। ''

दूधनाथ सिंह पर पाश्चात्य साहित्यकारों के प्रभाव ने उनके भीतर छिपे लेखक के गुणों को पुष्ट किया। 'सत्य' का प्रतिपादन किसी भी रचना का मुख्य उद्देश्य है और इसी 'सत्य' का उद्घाटन उनकी

तमाम रचनाओं में मिलता है, विशेषकर कक्षेतर साहित्य में दूधनाथ सिंह की कविताओं में मध्यवर्ग यह विदित है कि दूधनाथ सिंह बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखक थे। अन्य युवाओं की तरह इन्होंने भी अपने लेखन की शुरुआत कविता से की। वे जीवन और शब्द के पारखी रचनाकार हैं। इनके

प्रमुख कविता संग्रह 'युवा खुशबू तथा अन्य कविताएँ', 'तुम्हारे लिए', 'अपनी शताब्दी के नाम' तथा 'एक और भी आदमी है' प्रमुख हैं। ये सारे कविता संग्रह एक लंबे रचनात्मक दौर की प्रतिक्रिया स्वरूप उपने हैं शमशेर की कविताओं के संदर्भ में उनका यह कथन उनकी कविता विषयक दृष्टि को उद्घाटित करता है–

''उनकी कविताएँ क्या है सिवा निजत्व के अनवोले आख्यान के वे कविता के शरीर – में विचारों को 'सेल्स' की तरह बिछा देते हैं। इसलिए विचार उनकी कविता की जरूरत नहीं है, वह कविता में रचा हुआ कविता का स्वभाव है किसी दूसरे कवि का वे अपनी तरह होना पसंद नहीं करते थे। ... वे अपने में सम्पूर्ण, स्वतंत्र, एकात्म और अंतिम हैं। ... उनकी कविता का हर शब्द अपने बिंबात्मक प्रयोग के अंतिम छोर पर है। वे उसका सर्वस्व निचोड़ लेते हैं और किसी और कवि के लिए उसमें कुछ नहीं छोड़ते।

[4] सिंह दूधनाथ, कहा–सुनी', पहला संस्करण : 2005, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या दृ 45

शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं के संदर्भ में दूधनाथ सिंह के इस विचार से यह बात स्पष्ट हो जाती हैं कि कविता संबंधी उनकी दृष्टि काफी पैनी है और वे कविता के साथ–साथ कवि के मनोजगत का अध्ययन करने में माहिर हैं। यह उन्हें कविता जैसी विधा के सबसे करीब सिद्ध करता है । मध्यवर्ग के व्यक्ति की मानसिक संरचना ऐसी होती है जिसमें वह हमेशा किसी–न–किसी संशय का शिकार जान पड़ता है। यह संशय हमेशा उसके चरित्र में परिलक्षित होता है–

''मैं उन मित्रों शुभचिंतकों का कृतज्ञ हैं, जिन्होंने इन कविताओं को बचा रखा है उन सभी के भरोसे से चकित और संकुचित होता रहा हूँ। अपने को उलट–पुलट कर देखता हूँ और फिर दुनिया को, बीते हुए, जाते हुए समय को। ''

जिस तेजी से यह दुनिया बदल रही है उसमें संशय ने तेजी से अपनी जड़ें मजबूत की हैं। इस संशय का एक और कारण वास्तविक भौतिक जीवन से उपजी बिल्कुल निरर्थक और निर्मम परिस्थितियाँ हैं जो न केवल मनुष्य अपितु समाज को भी उदासी के भँवर में धकेल रही हैं। इसलिए कवि का मानस मनुष्य की शुष्क और निर्मम होती जाती जिंदगी को रस से सराबोर करने के लिए कविता को सबसे सशक्त माध्यम मानता है– –

''आह! मेरी कविता मैं तुझे पाठक या श्रोता कहाँ से ला यह वह कविता नहीं है यह केवल खून सनी चमड़ी उतार लेने की तरह है। यह कोई रस नहीं, जहर है... जहर! आह ! मेरे लोगों मैं तुझे अमृत के पेट कहाँ से पिता है?

इन पंक्तियों में एक प्रकार का आह्वान है जो लोगों में सुप्त होती जा रही मानसिकता को दर्शाता है। यहाँ मध्यवर्ग में आ रही गिरावट को इन पंक्तियों 'यह कविता नहीं है। यह खून सनी चमड़ी उतार लेने की तरह हैध ' में स्पष्टतः अनुभूत किया जा सकता है। साहित्य हमेशा 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' वाली भावना से अनुप्राणित होता है। लेकिन यह सबसे बड़ी विडंबना है कि जो लोग समाज की बुराइयों और कमियों को अपनी रचना के माध्यम से दर्शाते हैं जब वे ही स्वार्थलिप्सा का शिकार हो जाएं तो इससे विकट परिस्थिति क्या हो सकती है। यह स्थिति मध्यवर्गीय मानसिकता को दर्शाती है। इन पंक्तियों में 'एक विषाक्त समाज की सड़ाँध' महसूस होती है। लेकिन फिर कवि जीवन का तिरस्कार या निषेध नहीं करता बल्कि उसके भीतर छिपी आशा को अनुभूत करता है

"क्यों दी इतनी अथाह पावनता, कि प्यार नहीं कर सकता तुमसे भी क्यों दिया आँखों में रेत के फफोलों से भरा हुआ दरिया चेहरे पर घोंसला बनाए हुए, चित्रलिखी पंखहीन, एकाकीपन चिड़िया इतना सब देने के बाद वह क्यों दी जीवन–जल की हरी–हरी सतह ... तब क्यों दी?

''यह जीवन जल की हरी–हरी सतह एक प्रकार की माया है, एक प्रकार का भौतिक सुख है, जिसके पीछे पूरी दुनिया भाग रही है। मध्यवर्ग भी इसी भागदौड़ में शामिल एक ऐसा वर्ग है जो इस जीवन की सच्चाईयों से अवगत होते हुए भी सब कुछ पाना चाहता है। इस कविता में लोकधर्मिता बनाम जीवन को निस्सारता का वर्णन है यह लोकधर्मिता और निस्सारता संघर्षपूर्ण जीवन जीने के दौरान बटोरी गई अनुभूतियाँ हैं, जो जीवन जीने के लिए जरूरी दुनिया में उसे भटकाती रहती है।

उपसंहार:- इस प्रकार से कहा जा सकता है कि दूधनाथ सिंह अपने कथा–साहित्य में अपने पाठकों को भारतीय संस्कृति, दार्शनिकता, मानवता और विविध समस्याओं के समाधान के साथ–साथ जीवन के रहस्यों का भी अनुभव कराते हैं। उनकी रचनाएं बहुत ही आसानी से समझ में आती हैं और उनमें समस्याओं के सुलझाव का भी शानदार तरीका दिखता है। इसलिए, दूधनाथ सिंह एक ऐसे कथाकार हैं जो अपनी रचनाओं से अपने पाठकों के दिलों में अमर रहेंगे।

संदर्भ सूची

सिंह दूधनाथ, कहा– सुनी, पहला संस्करण : 2005, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 27

सिंह दूधनाथ, कहा–सुनी', पहला संस्करणः 2005, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 27

सिंह दूधनाथ, 'कहा–सुनी', पहला संस्करण : 2005, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 130

सिंह दूधनाथ, 'लौट आओ घर, दूसरा संस्करणः 1997, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 52

सिंह दूधनाथ, (बतौर भूमिका), 'युवा खुशबू और अन्य कविताएँ', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2010

सिंह दूधनाथ, अपनी शताब्दी के नाम', साहित्य भंडार, इलाहाबाद, द्वितीय संग्रह : 2014, पृष्ठ संख्या 87